विकलांग मंच

विकलांग समुदाय का मार्गदर्शक पाक्षिक

निराशा, हताशा से कुंठित जिन्दगियों में शाश्वत आत्मविश्वास की आस्थापना और नई चेतना जगाने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील

आशादीप संस्थान, जयपुर

वर्ष : 29 अंक: 8ए	जयपुर 23 अक्टूबर, 2014	RNI No.: 46429/86 Po.Regn.No.:RJ/JPC/FN-09/2012-14	वार्षिक शुल्क: 50/- प्रति मूल्य: 2.50

प्रकाश किरण विशेषांक

दीपावली पर्व और पर्यावरण

दीपावली पर्व का पर्यावरण के साथ घनिष्ठ सम्बंध है। इसका प्राचीन वैदिक नाम शारदीय नवसस्येष्टि है। शरद काल की नई फसल का त्यौहार। फसल मुख्य रूप से धान की। इस अन्न का उपभोग करने के पहले किसान उसकी यज्ञ में आहुति प्रदान करते थे। इसी कारण इसका नाम शारदीय नवसस्येष्टि है। दूसरा नाम दीपावली है। जिस प्रकार आश्विन मास की पूर्णिमा वर्ष की सर्वोत्कृष्ट चांदनी रात मानी जाती है उसी प्रकार कार्तिक मास की अमावस्या वर्ष की अंधेरी रातों में सबसे सघन अंधेरी रात मानी जाती है। इस गहन अंधकार वाली रात का पर्यावरण की दृष्टि से विशेष महत्व है।

वर्षा समाप्त हो चुकी है। किसान के घर नई फसल का अन्न आया है। वर्षाजल से गली-कूचों में नमी के कारण विभिन्न प्रकार के रोगों के कीटाणु उत्पन्न हो जाते हैं जिनका शमन अत्यावश्यक है। इसके लिए कार्तिक मास की अमावस्या की रात और उस रात के दिन का बड़ा महत्व है। दिन के समय नई फसल के अन्न का हवन सामग्री व घी से हवन करना एवं रात के समय दीपों की अवलियां बनाकर स्थान-स्थान पर सजाना। उन दीपों में घी व सरसों के तेल का प्रयोग करना। दिन के हवन से दिन का पर्यावरण शुद्ध और रात में दीपों की सजावट से विभिन्न प्रकार के रोगाणुओं का शमन।

हुयी न पर्यावरण की रक्षा। इन दोनों का अन्योन्याश्रय सम्बंध है। एक दूसरे के पूरक है। मानव का स्वास्थ्य शुद्ध पर्यावरण में ही सम्भव है। इसके प्रति हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि बड़े सतर्क और जागरूक रहते थे। हम सभी जानते हैं कि पर्यावरण की रक्षा जनसहयोग से ही हो सकती है। दीपावली पर्व भी इसी भावना से जुड़ा हुआ है।

इस पर्व से पर्यावरण की रक्षा कैसे होती है? यह विचारणीय बिन्दू है। वास्तव में इस दिन प्रात:काल घर-घर यज्ञ-हवन होता था। उससे वायु सुगंधित हो उठती थी। घी और हवन सामग्री की आहुतियों से पूरा पर्यावरण प्रभावित होता था क्योंकि उसके सूक्ष्म परमाणु वायु का संशोधन कर देते थे। घी में भेदक शक्ति होने के कारण वायु का प्रदूषण समाप्त हो जाता था। विशाल पैमाने पर यह क्रिया होने के कारण इसका प्रभाव दूर-सुदूर पड़ता था। इसे उत्सव का रूप दिया गया ताकि जनता-जनार्दन इसमें सौत्साह भाग लें। इसकी तैयारी बहुत पहले प्रारंभ हो जाती थी। लोग अपने घरों, गलियों, राहों, दुकानों सबकी सफाई करते थे। घरों की रंगाई-पुताई की जाती थी जिससे कि कूड़ा-कचरा साफ हो जाए और कीड़े-मकोड़े भी निकल जाएं। आज भी वैसा किया जाता है।

इस प्रकार हवन और सफाई के माध्यम से पर्यावरण संशोधित हो उठता था। आज स्थितियां बदल गई हैं। सफाई तो जरूर की जाती है किन्तु उससे कई गुना अधिक पटाखों और आतिशबाजियों से वातावरण को अशुद्ध

(शेष पेज 2 पर)

नि:शक्तजन के अपमान पर होगी पांच साल जेल

जयपुर। अनुसूचित जाति और जनजाति की तरह अब नि:शक्तजनों को सार्वजनिक रूप से अपमानित करने पर भी पांच साल तक की जेल की सजा का प्रावधान करने की तैयारी है। प्रस्तावित नि:शक्तजन अधिकार विधेयक में नौकरी व शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के लिए आरक्षण 3 से बढ़ाकर 5 प्रतिशत करने और कानून का पालन नहीं होने पर सजा के लिए विशेष कोर्ट बनाने का भी प्रावधान है।

इसके अलावा अधिकारों की रक्षा के लिए केंद्र व राज्य स्तर पर आयोग बनाने का प्रावधान भी है। विधेयक के प्रारूप पर संसदीय समिति ने हाल ही में आपत्तियां और सुझाव मांगे हैं। समिति जल्द ही अपनी सिफारिशों पर रिपोर्ट देगी। कानून बनने पर सार्वजनिक भवनों में रैम्प निर्माण प्रावधानों का भी पालन करना अनिवार्य होगा।

मौजूदा हालात से

1995 में कानून बनने के बावजूद नि:शक्तजन रैम्प और नौकरियों में आरक्षण के लिए संघर्षरत।

अनेक सरकारी भवनों, स्कूलों और सार्वजनिक स्थलों पर आज भी रैम्प नहीं हैं। नि:शक्तजन आयुक्त कई बार जारी कर चुके आदेश।

राजस्थान न्यायिक सेवा तक में पिछले साल चयनित पहले नि:शक्त अधिकारी को प्रशिक्षण के लिए 9 माह से ज्यादा समय इंतजार करना पड़ा।

सिविल सेवा और राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयन के लिए भी नि:शक्तों को कोर्ट का दरवाजा खटखटाने पर आरक्षण का लाभ मिलने लगा।

5 श्रेणियों में आरक्षण

- पूरी तरह नहीं देख सकने वाले या कम दृष्टि वाले
- सुनने व बोलने में परेशानी महसूस करने वाले
- चलने में अशक्त (कुष्ट रोगी, सेरेब्रल पॉल्सी वाले भी शामिल)
- ऑटिज्म, बौद्धिक नि:शक्तता व मानसिक रूग्णता वाले
- बहुनि:शक्तता वाले

अपराध और सजा

- कानून तोड़ने पर 6 माह से दो साल तक सजा
- 10 हजार से पांच लाख तक जुर्माना
- नि:शक्त के नाम पर गलत फायदा उठाने पर दो साल की सजा या एक लाख रूपए तक जुर्माना या दोनों
- नि:शक्तजन को अपमानित, प्रताडित करने, भेदभाव, यौन उत्पीड़न या नि:शक्त महिला का जबरन गर्भपात पर 6 माह से पांच साल तक सजा

ये हैं प्रावधान

शिक्षा के लिए : स्कूलों में खेलकूद के लिए आवश्यक सुविधाए भवन में आसानी से प्रवेश, ब्रेल और साइन भाषा में प्रशिक्षित शिक्षक, छात्रवृत्ति और शिक्षण संस्थानों में पांच प्रतिशत तक प्रवेश

कौशल विकास और रोजगार : स्वरोजगार के लिए प्रशिक्षण व अन्य सहयोग, नौकरियों में पांच प्रतिशत कोटा

सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य व पुनर्वास : पेंशन, बेरोजगारी भत्ता और मुफ्त इलाज, नि:शक्त कर्मचारियों के लिए बीमा योजना, विकास व सुविधाओं के लिए अलग से बजट विधेयक में नि:शक्त व्यक्ति को लूला, लंगड़ा, बहरा या अंधा जैसे शब्द कहना अपमानित करना है। ऐसा करने पर सजा। आरक्षण प्रावधानों का पालन न होने पर कार्रवाई और विशेष न्यायालयों का प्रावधान है।

-खिल्लीमल जैन, पूर्व नि:शक्तजन आयुक्त

दीपावली पर्व और पर्यावरण.....

(शेष पेज 1 का)

बना दिया जाता है। हवन यज्ञ तो बहुत कम घरों में होता है। थोड़ा बहुत होता है तो उसे पटाखे से पाट दिया जाता है। पटाखों से इतना ध्वनि प्रदूषण होता है जिसकी कल्पना नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री के द्वारा ऐलान किया गया। स्वच्छ भारत अभियान एक सराहनीय कदम है पर हम उस अभियान को कैसे सफल बना पाएंगे। जब खुशियों के नाम पर पटाखे और आतिशबाजियों से प्रदूषण उत्पन्न करेंगे। दीपावली का पटाखों के साथ दूर का भी संबंध नहीं है। एक बीमार व्यक्ति शय्या पर पड़ा हुआ है। वह कैसे उस प्रदूषण में जी पाएगा। छोटे-छोटे अबोध बच्चों के कानों में वह ध्वनि कितना कुप्रभाव डालती है। फेफड़ों में प्रदूषित वायु कितना कुप्रभाव डालती है- यह अनुभव सिद्ध बात है। किसको क्या समझाया जाए? सभी पढ़े-लिखे हैं और शुद्ध पर्यावरण में सुस्वास्थ्य सबको चाहिए।

पहले सरसों के तेल के दीपक व घृतदीप जलाए जाते थे। आज उनका स्थान मोमबत्तियों और बिजली के बल्बों ने ले लिया है। परम्परागत दीपक बहुत कम हो गए हैं। पर्यावरण की दृष्टि से मिट्टी के दीपों का महत्व अधिक है क्योंकि जब वे दीप जलते हैं तो गहन अंधेरी रात में उसके प्रकाश में रोग के कीटाणुओं का शमन हो जाता है। इस प्रकार वातावरण सुस्वास्थ्यप्रद बनता है। रात में जगमगाते दीपों की पंक्तियां स्वर्गिक दृश्य उपस्थित करती हैं। उसकी सुन्दरता पर मुग्ध होकर कवियों ने अपनी कल्पना के आधार पर अनेकश: काव्य सृजन किए हैं। उन्हें प्रतीक मानकर शिक्षाप्रद उपदेश दिए हैं। हमें इस पर्व की वैज्ञानिकता समझनी पड़ेगी, तभी हम इसका महत्व समझ पाएंगे।

आर्थिक दृष्टि से पटाखों पर जितना अपव्यय होता है उतना व्यय यदि सृजन और सौन्दर्यीकरण पर किया जाए तो शहर, नगर व ग्राम और सुन्दर बन जाएं और वातावरण को भी क्षति न पहुंचे। प्रतिवर्ष न जाने कितने बच्चे दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं, कितने स्थानों पर आग भी लग जाती है। काश! इस पर्व को वैज्ञानिक ढंग से मनाया जाता तो पर्यावरण कितना स्वच्छ बनता। हमारे ऋषियों की परिकल्पना वातावरण की शुद्धता और स्वास्थ्य के आधार पर थी। हमें उसे जानना होगा।

आर्य समाज इस पर्व को ऋषि निवार्ण दिवस/ दीपावली के रूप में मनाता है क्योंकि इसी दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती को निर्वाण प्राप्त हुआ था। उन्होंने वेद ज्ञान के प्रचार में अपना जीवन आहूत कर दिया। इस महान पर्व के दिन हम उनके त्याग और कार्यों को यादकर महत्ती प्रेरणा ले सकते हैं। इस विज्ञान के युग में भी पाखंड और कुरीतियां हैं, अंधविश्वास है, भ्रांतियां हैं, रूढ़ियां हैं इन्हें दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द के बताए सन्देश वेदों की ओर लौटो पर चिन्तन-मनन करना होगा। उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करना होगा। आज मानव को मानव से ही भय है। न जाने वह कितने क्रूर कर्म कर रहा है जिसे पढ़-सुनकर हृदय दहल जाता है। ऋषि निर्वाण दिवस पर हमें व्रत लेना होगा कि हम उनके द्वारा जलाए गए वेद दीप को घर-घर में पहुंचाए। वेदों का पठन-पाठन हो। यज्ञ-हवन हो। मानव मानव बने। आसुरीवृत्तियों का संहार हो। सम्प्रति अर्थप्रधान युग में मानव ने सारे हथकंडे अर्थप्राप्ति में लगा दिए हैं। इसी कारण मानवता के मार्ग पर सन्नाटा पसरा है। सत्य को ग्रहण करने से व्यक्ति कतराता है। यह निर्वाण दिवस आपसे बहुत कुछ कह रहा है। बहुत कुछ अपेक्षाएं रखता है।

हम दीपावली के पर्व को सोत्साह मनाएं, क्योंकि यह ऋषियों का शोधपूर्ण पर्व है। वैज्ञानिक पर्व है। पर्यावरण से जुड़ा हुआ पर्व है। ज्ञान के प्रकाश का पर्व है। इस दिन हम यज्ञ-हवन अवश्य करें। वेदों का अध्ययन करें। ऋषियों के ग्रंथों का स्वाध्याय करें। घर, गली, मुहल्ले, राह, बाग-बगीचे, दुकान, पार्क, मैदान सभी को स्वच्छ और दर्शनीय बनाएं। वायु की निर्मलता पर विशेष ध्यान दें। ध्वनि प्रदूषण न करें। रात्रि की निस्तब्धता तीव्र ध्वनियों से आहत होती है। रूग्ण शय्या पर पड़े हुए लोग, वृद्ध, बच्चों को तीव्र ध्वनियां असहनीय लगती है। आस-पड़ौस में मिष्ठान बांटिए। इससे प्रेमभाव बढ़ेगा। सामूहिक रूप से नए अन्न के साथ विशाल यज्ञ कीजिए, वातावरण शुद्ध बनेगा। सारे पर्व मानव को खुशियां और आनन्द देने के लिए हैं यह तभी संभव है, जब हम उन पर्वों को वैज्ञानिक ढंग से मनाएंगे। पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए कार्य करेंगे। स्वच्छता करके उसकी सुन्दरता को हृदयंगम करेंगे। आज की स्थिति में दीपावली का यह महान संदेश है। मूक आह्वान है।

-अर्जुनदेव चड्ढा

With Best Compliments From

HEERALAL CHHAGANLAL TANK

Manufacturing Jewellers

Moti Singh Bhomiyon Ka Rasta,
Johari Bazar, Jaipur-302003

Phone : 2561621, 2563671 (O)
2620556, 2606919 (R)

Fax : 0141-2565390

हरियाणा एवं महाराष्ट्र में भाजपा की जीत एवं दीपावली के त्यौहार पर प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

तेज सिंह चौहान (रुंवा)

एडवोकेट

भाजयुमो, मण्डल डेगाना,नागौर

मो.:9680225888

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

प्यार और यकीन के जज्बात चाहिए।
जो सहारा बन सके वह हाथ चाहिए॥
जीत लेंगे इस दुनिया को एक पल में।
हमें हर कदम बस आपका साथ चाहिए॥

रुपचंद गर्ग

100, सेक्टर-12 एल,
हनुमानगढ़ जंक्शन
मो.: 9982879750

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ. आर.एस.चौहान

भाजपा निःशक्तजन सेवा प्रकोष्ठ

संभाग सचिव, जोधपुर
राना डेन्टल हास्पिटल के पास,
बीदासर रोड़,
डेगाना, नागौर
मो.:9413983704

विकलांग मंच कार्यालय: प्लाट नं. 141, सेक्टर-8, मालवीय नगर, जयपुर-302017, फोन:0141-2547156. फोटो टाइपसेटिंग: टास्क ग्राफिक्स (मोबा.:9828278728)। मुद्रित: श्रीराम आफसेट, जोरावरसिंह गेट बाहर, आमेर रोड, जयपुर। संरक्षक: डी.आर.मेहता (रिटा.आई.ए.एस.)। प्रधान संपादक: एम.आर.सिंघवी (रिटा.आई.आई.एस.)। प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक: एन. के.खत्री। संपादकीय सलाहकार:डॉ. अरुण माथुर। हाडोती अंचल ब्यूरो प्रमुख: अर्जुन देव चड्डा, कोटा। देहरादून अंचल ब्यूरो प्रमुख: वी.डी. शर्मा। प्रबन्धक : धर्मपाल।

इस दीपावली पर कुछ नया करें

जीवन का बहीखाता लिखना प्रारंभ करें

- राजेन्द्र जैन 'महावीर'

हम सभी जैन होने के साथ 'बनिये' भी कहलाते है, जैन की परिभाषाएं बहुत सारी आप सभी ने सुनी होगी, जो जिनेन्द्र देव की आज्ञा माने या उनके बताए हुए मार्ग पर चले वो जैन कहलाता है। दसूरा हम 'बनिये' बनिये की परिभाषा का संदर्भ व्यापारिक रुप से है जो दूसरों को बना दे वह बनिया, एक परिभाषा यह भी सुनी थी कि जो अपना काम किसी भी परिस्थिति में बना ले वह 'बनिया' है। बनियापन की दूसरी परिभाषा मुझे उचित प्रतीत होती है, क्योंकि बनियों में हर परिस्थिति में धैर्य धारण का पैतृक गुण होता है। वह व्यापार-धंधें में धैर्यवान होता है। लेकिन आजकल बनियागिरि के संस्कार विलोपित होते जा रहे है। अब तो संस्कार भी इंग्लिश है और भावों में एमबीए है, व्यापार विज्ञापन व मार्केटिंग है, 'पैकिंग अच्छी माल घटिया' व्यापार का टेण्ड बनता जा रहा है। फिर भी जैन बनियों की प्रमाणिकता व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में आज भी है। जहां पूर्वजों ने अपनी पेढ़ी की विरासत सौंपी है वहां जैन बनिये अपना व्यापार प्रतिष्ठा पूर्ण तरिकों से कर रहे है।

दीपावली का अवसर 23 अक्टूबर को हमारे बीच आ रहा है, हम भगवान महावीर के निर्वाण महोत्सव को दीपावली के रुप में मनाते है। इस दिन हमारे यहाँ बहीपूजन होती है, आजकल शासकीय वर्ष तो 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होता है, फिर भी हम सारे बहीखातों की पूजा, दीपावली के दिन कर लेते है और व्यापार के लिए इसे शुभ मानते है । बही पर भी शुभ-लाभ, लक्ष्मीजी सदा सहाय हो, आदि वाक्य लिख लेते है हमारी अच्छी परम्परा है। मै इस वर्ष दीपावली के अवसर पर यह निवेदन कर रहा हूँ कि हमने दूसरों के हिसाब-किताब के लिए अनेकों बहीखाते भर लिए है, इस दीपावली पर भी नये बहीखातों का पूजन हम दूसरों का हिसाब लिखने के लिए ही करेंगे।

हमने कभी अपने इस मनुष्य जीवन का हिसाब-किताब रखा? क्या हमारे जीवन में हिसाब-किताब की कोई अहमियत है या नहीं? क्या हमारा जीवन सिर्फ दूसरों के साथ व्यापार करने का ही माध्यम है? क्या हमें अपने जीवन का हिसाब-किताब नहीं रखना चाहिए? तेरासी लाख नौ सौ निन्यानवें योनियों के बाद अपार पुण्योदय से मिली मनुष्य देह क्या सिर्फ दिन रात व्यापार करने के लिए ही मिली है? या हमारा कोई दूसरा काम भी है? यदि हम विचार करें तो सारे जीवन निरंतर धनोपार्जन में लगे रहते है, दूसरों का क्या संपूर्ण नगर का हिसाब हमारे पास रहता है लेकिन क्या हमारे जीवन का कोई हिसाब-किताब हमारे पास है तो पाते है, मैंने बच्चों के लिए किया, पत्नी के लिए, बहन-भाई, मित्र सभी के लिए किया, नहीं किया तो अपने लिए कुछ नहीं किया और जीवन का अंतिम समय आ जाता है।

इसलिए आईये इस दीपावली पर तय करें कि अपने जीवन का भी लिखित हिसाब रखेंगे, उसमें अपने त्यागों का उल्लेख करेंगें, अपनी भावनाओं को लिखकर रखेंगे। हमें यह देखना चाहिए धन कि लिप्सा एक ऐसी तृष्णा है जो निरंतर बढती ही जाती है । इसलिए जीवन में परिग्रह का परिमाण अवश्य करना चाहिए और जीवन में उसे लिखना भी चाहिये।

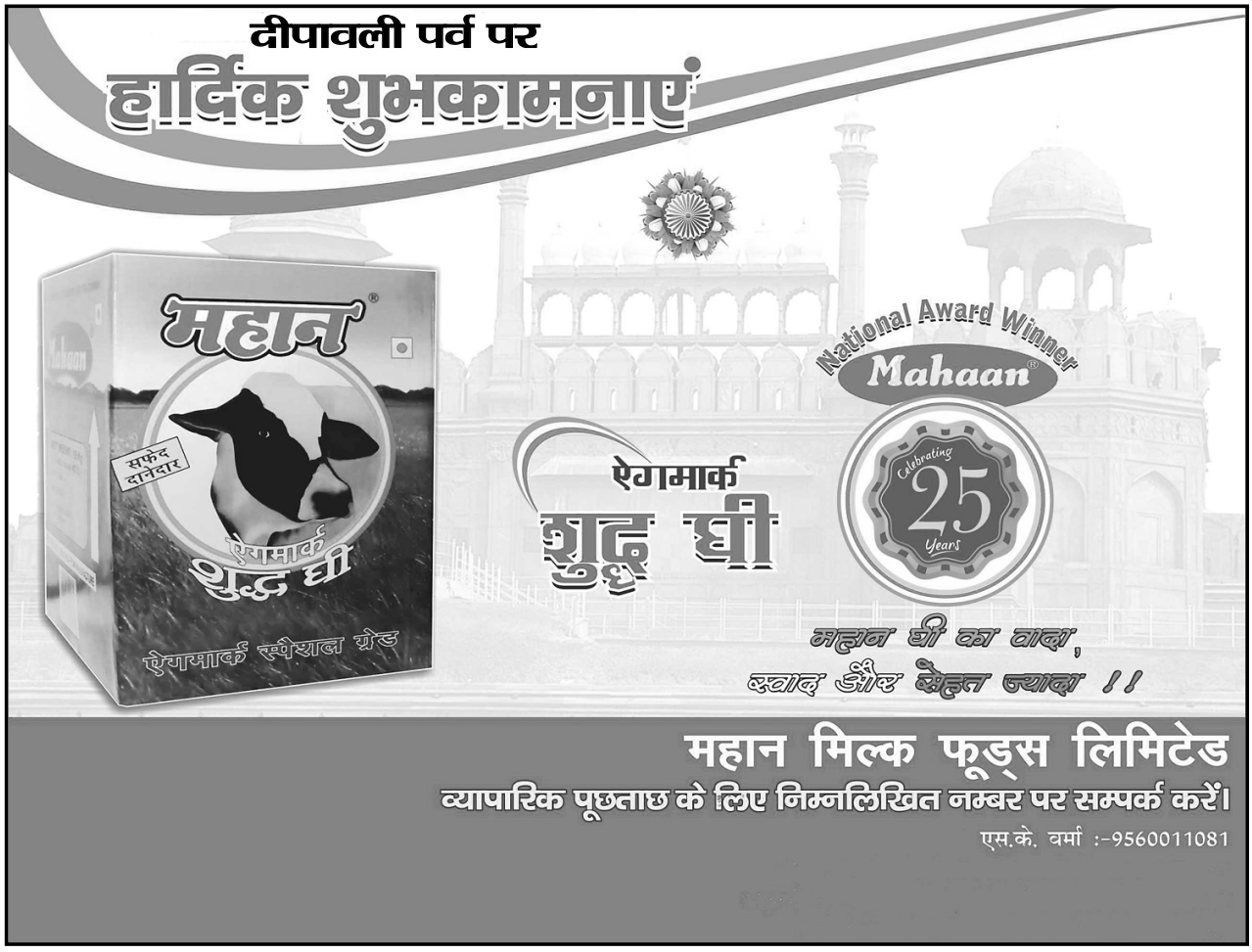

आधुनिकता की चकाचौंध में खोयी दीपों की जगमग

बरनाला। आधुनिकता की चकाचौंध ने पुरानी भारतीय परंपरा और त्यौहारों के रिवायती खूबसूरती को तहस नहस कर दिया है और यही कारण है कि पुरानी रिवायती वस्तुएं अपना वजूद खोती जा रही हैं।

आधुनिकता के दौर में दीवाली अब रिवायत से दूर हो रहा है क्योंकि मिट्टी के दीपों की जगमग कहीं खो गयी है और उसकी जगह बिजली के बल्वों और मोमबत्तियों ने ले ली है। दीयों को रंगों से चमकाने वाले कुम्हारों की जिंदगी बेरंग होती जा रही है क्योंकि कभी यही उनकी आय का साधन था। समय के साथ साथ लोगों ने दीयों के बजाय मोमबत्तियों को महत्व देना शुरू कर दिया और रंगबिरंगी रोशनी से सजावट का चलन चल पड़ा जिससे दिये घरों से गायब होने शुरू हो गये। लोगों ने यह समझना जरूरी नहीं समझा कि पर्यावरण को शुद्ध बनाने में घी अथवा तेल के दीयों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है। अब लोग दीयों की अहमियत तथा रिवायत भूलकर बिजली की रंगबिरंगी लड़ियों पर जोर देते हैं। अब बाजार चीनी माल से अटे पड़े हैं जो पर्यावरण के लिये नुकसान देह हैं।

दीवाली पर दीयों से दूर हो रहे लोग इन्हें मुंडेर काली करने वाले कहकर दुत्कार रहे हैं जिसका असर दीयो या अन्य मिट्टी के बर्तन बनाने वालों की जिंदगी पर सीधा पड़ रहा है। हमारे समाज का अटूट अंग प्रजापत भाईचारा जो दशकों से मिट्टी के बर्तन बनाने कारण मशहूर है लेकिन आज यह अपना पुश्तैनी काम त्याग कर अन्य धंधों की ओर चल पड़े है।

प्रजापत बिरादरी के लोग बड़ी संख्या में अपना पुश्तैनी धंधा के वजूद बचाने के लिए जद्दोजहद कर रहे हैं लेकिन गरीबी ने इनका हौंसला पश्त कर दिया। मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कुछ लोग बात करते समय भावुक हो गये। कुम्हार राम चंद (45) ने कहा कि अब तो दीये तथा अन्य बर्तन सिर्फ तस्वीरों में ही सिमट कर रह गए हैं। आज लोग मिट्टी के दीयों व अन्य बर्तनों को सिर्फ शौक के तौर पर ही लेते हैं जबकि पहले ये बर्तन लोगों की जरूरत हुआ करते थे। दीयो के अलावा मिट्टी के मटके, सुराही, तपले, बठली, रिड़कना आदि त्यौहारों के अवसर पर लोगों द्वारा खूब खरीदे जाते थे, लेकिन दीयो की खरीद काफी कम हो गई है। रेशमा देवी, कश्मीर कौर तथा वीर पाल ने कहा कि पहले गांवों में खच्चर की रेहड़ियों पर जाकर लोगों को बर्तन बेचते थे जिसके बदले पैसे या गेहूं कापी मात्रा में इकट्ठी हो जाती थी जो उनके गुजारे के लिये काफी होती थी। आज यह काम करना कोई आसान नही रह गया क्योकि मिट्टी के बर्तन के दीए अब गावों में खरीद करने के लिए लोग ज्यादा दिलचस्पी नही दिखा रहे हैं। दूसरी ओर बर्तन बनाने के लिए प्रयोग की जाती काली मिट्टी की ट्राली 2000 रुपए में मिलती है जो पहले मुफ्त में ही मिल जाती थी। मंहगाई बढ़ने के कारण खर्च कमाई से अधिक हो जाते हैं जिस कारण बच्चों का पालन-पोषण इस धंधे से करना मुश्किल हो रहा है।

With best compliments from :

VARDHMAN POLYTEX LIMITED

Oswal® Group

Badal Road, Bathinda.
Ph - 0164- 2280353, 2281526, 2281771
Fax - 0164- 2283050
Email- vplb.pir@oswalgroup.com , vplb@oswalgroup.com

Manufacturers & Exporters of :
HIGH QUALITY YARN-COTTON
ACRYLIC/LYCRA & SLUB YARN
POLYESTER & BLENDS

SISTER UNITS

Vardhman Polytex Limited, Nalagarh
Vinayak Textile Mills, Ludhiana
Vardhman Park, Ludhiana
Am Kryon International Pvt. Ltd., Ludhiana

आओ फिर से दिया जलाएं

भरी दुपहरी में अंधियारा
सूरज परछाई से हारा
अंतरतम का नेह निचोड़ें-
बुझी हुई बाती सुलगाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं

हम पड़ाव को समझे मंजिल
लक्ष्य हुआ आंखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में-
आने वाला कल न भुलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा।
अपनों के विघ्नों ने घेरा।
अंतिम जय का वज्र बनाने-
नव दधीचि हड्डियां गलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं

अटल बिहारी वाजपेयी

तस्करी के कारण लक्ष्मीजी की सवारी उल्लू विलुप्त होने के कगार पर

जयपुर। लक्ष्मीजी की सवारी माने जाने वाला उल्लू बढ़ती तस्करी एवं संरक्षण के प्रति अनदेखी के कारण विलुप्त होने के कगार पर हैं।

आगामी 23 अक्टूबर को रोशनी का पर्व दीपावली पूरे देश में रंगबिरंगी रोशनी एवं आतिशबाजी के साथ बडे उल्लास के साथ मनाई जाएगी और उसी दिन धन की वृद्धि एवं समृद्धि के लिए लक्ष्मी की पूजा की जाएगी जबकि लक्ष्मी की सवारी माने जाने वाले पक्षी उल्लू पर बढ़ती तस्करी से खतरा बढ़ता जा रहा हैं।

तंत्र, मंत्र, शक्ति एवं सिद्धि प्राप्ति के लिए उल्लू की तस्करी करने वाले तस्करों की निगाहे इस पक्षी पर लगी हुई हैं और वह अब देश में गिद्ध की तरह विलुप्त होता जा रहा हैं।

पर्यावरण एवं वन्यजीव संरक्षण संस्था पीपुल फॉर एनीमल्स (पीएफए) के राजस्थान में प्रभारी एवं प्रसिद्ध पर्यावरणविद बाबूलाल जाजू ने उल्लू को बचाने के लिए केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावेडकर को एक पत्र भी लिखा हैं। जाजू ने जावडेकर से उल्लू के संरक्षण पर शीघ्र ध्यान दिए जाने का आग्रह किया हैं।

उन्होंने कहा कि उल्लू के संरक्षण पर शीघ्र ध्यान नहीं दिया गया तो गिद्ध की तरह उल्लू भी केवल चित्रों में ही दिखाई देंगे। जाजू ने बताया कि देश में कुछ वर्षों पहले उल्लू बहुतायत संख्या में दिखाई देते थे लेकिन इनके बसेरे एवं प्रजनन स्थल ईमली, बरगद एवं पीपल के पेड़ों की लगातार घटती संख्या एवं तस्करी के कारण इनकी भी संख्या तेजी से घट रही हैं।

उन्होंने बताया कि उल्लू एक बार में दो बच्चों को जन्म देते हैं और इन पेडों के अभाव में उनके आवास स्थल नष्ट होते जा रहे हैं। इससे इनकी प्रजनन गति काफी कम हो गई हैं। उन्होंने कहा कि देश में अनेक राज्यों में तंत्र साधना के लिए दीपावली से पूर्व उल्लूओं की बलि चढ़ाने के अंधविश्वास के कारण इस पक्षी की जान पर बन आई है।

उन्होंने बताया कि इसे बचाने के लिए उत्तराखण्ड सरकार के वन विभाग में पिछले वर्षों रेड अलर्ट जारी किया था और इसके तहत जंगलों में गश्त भी बढ़ाई थी। उन्होंने कहा कि देश में सरकारों एवं समाज को मिलकर तस्करों एवं तांत्रिकों के खिलाफ अभियान चलाने की जरुरत हैं। जाजू ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उल्लू की मांग में तेजी आने के कारण देश एवं प्रदेश में पक्षियों का अवैध व्यापार करने वालों की गतिविधियां भी तेज हो गई है। इन दिनों बाजार में बार्न उल्लू, ग्रेट होर्नड तथा यूरोपीयन ईगल उल्लूओं की मांग ज्यादा है और इनमें प्रत्येक उल्लू की कीमत तीन से पांच लाख तक बताई जा रही है।

जाजू ने बताया कि शिकारी उल्लूओं को जंगल से पकड़कर व्यापारियों को बेंचते हैं जिन्हें व्यापारी के एजेन्ट नेपाल तथा बांग्लादेश के रास्ते यूरोप एवं मध्य पूर्व के देशों में पहुंचाते हैं। उन्होंने बताया कि उल्लू को शोध के लिए भी इस्तेमाल किया जाने लगा है।

उन्होंने बताया कि देश में वर्ष 1990 में वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 के तहत उल्लू पकड़ने और व्यापार करने पर रोक लगाई गई थी। लेकिन उल्लू की तस्करी का गोरख धंधा सरकार की अनदेखी के कारण अभी तक नहीं थम पाया है। उन्होंने बताया कि राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात एवं उत्तराखण्ड सहित देश में आठ किस्म के उल्लू पाये जाते हैं।

लेकिन पर्याप्त संरक्षण के अभाव में अब ये सभी प्रजातियां लुप्त होने के कगार पर हैं। उन्होंने कहा कि इनके बचाव के लिए इनके बसेरे वाले पेड़ों को ज्यादा से ज्यादा लगाकर विकसित किये जाने चाहिए ताकि संकट में घिरी उल्लू प्रजाति को बचाया जा सके।

उन्होंने बताया कि विदेशों में उल्लूओं को बचाने के लिए विशेष अभियान चलाये जा रहे हैं लेकिन भारत में अब तक ऐसा कोई प्रयास नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि इस अभाव के कारण गिद्ध विलुप्त हो गए और उल्लू लुप्त होने के कगार पर हैं ऐसे में सरकार को इस ओर शीघ्र ध्यान देकर इनके प्रति जागरुकता फैलाने की जरुरत हैं।

इस त्यौंहार
उपहारों की बौछार
TVS
माइलेज का बाप

*Conditions Apply.
न्यूनतम ब्याज दर पर फायनेंस सुविधा उपलब्ध
एक्सचेंज सुविधा उपलब्ध
अधिकृत विक्रेता :- के.एस. टीवीएस, एम आई रोड़, जयपुर फोन - 0141-4055505, 4055502
टोंक रोड़:- ग्लास फैक्ट्री के सामने फोन - 0141-4055590, 9829057751
आदर्श नगरः- बी-२ ए सैठी कॉलोनी गोविन्द मार्ग जयपुर फोन - 0141-4055590, 9829057751
सीकर रोड़:- 28 राधा गोविन्द कॉलोनी, ढेहर का बालाजी, सीकर रोड़ जयपुर फोन - 0141-3258383 9950008039

The Laxmi Niwas Palace

Heritage Hotel

The Monumental Palace Built in 1902, the principal residence of the Maharaja Ganga Singh of Bikaner

Owner:
The Golden Triangle Fort & Palace Pvt. Ltd.

Access :
329 Kms from Jaipur Airport.
250 Kms from Jodhpur Air port.
3 Kms from Bikaner railway station.
1Km from Bikaner Bus Terminal.

Location :
2 Kms North of Junagarh Fort

Multi Cuisine Restaurants - 2
24 Hours Coffee shop,
Open Air Restaurant,
Bar, Conference Rooms - 2

Places of Interest:
The Junagarh Fort & Museum
Deshnok Temple (Karni Mata Temple)
Sand Dunes
1000 Havelies of Bikaner
Laxmi Nath Temple (110 Years)
Kapil Muni Temple
Camel Breeding Farm
Royal Cenotaphs
Fire Dancer Village

Facilities :
Mini Bar, Tea Coffee Maker,
Safe in rooms, Wi-Fi Connectivity,
24 Hours Room Service, Laundary,
Kerala Ayurvedic Massage,
Swimming Pool,
Business Center, Parking,
Money Exchange. Jeep Safari / Camel Safari and Valet on request.
Rajasthani Folk
Dances every evening.

Other Facilites :
Putting Green, Lawn Tennis,
Table Tennis, Billiard Room, Board Games, Croquet, Badminton.

Credit Cards :
All Major Credit Cards are Accpected

Address : Dr. Karni Singhji Road, Bikaner- 334001 Rajasthan, (INDIA)
Phone : +91-151-2200088, 2202777 Facsimile: +91-151-2521487
E-mail- bikaner@laxminiwaspalace.com
Website : www.laxminiwaspalace.com

वृन्दावन की विधवाओं ने यमुना में किया दीपदान

मथुरा। दीपावली पर्व पर वृंदावन की विधवाओं ने पतित पावनी यमुना के तट पर दीपक जलाकर पर्यावरण स्वस्थ रखने के साथ यमुना के जल को निर्मल बनाने का संदेश दिया।

इन महिलाओं ने हजारों जलते हुए दिये यमुना में प्रवाहित करके एक अनूठा दीपदान किया। इन दीपों से फैला प्रकाश समाज से उपेक्षित इन महिलाओं के जीवन में फिर से आये उजाले को प्रतिबिंबित कर रहा था।

कृष्ण भक्ति की लालसा लेकर वृन्दावन आई इन विधवाओं का जीवन बेहतर बनाने के लिए सुलभ इंटरनेशनल जहां उनके ठहरने, भोजन के लिए धनराशि और अन्य सुविधा मुहैया करा रहा है। वहीं सामाजिक दृष्टि से उनके जीवन में ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास कर रहा है जहां ये विधवाएं देश के प्रमुख त्योहारों की मूल भावना का आनन्द ले सकें।

इसी श्रृंखला में जहां गत वर्ष इन विधवाओं ने श्यामसुन्दर के साथ होली खेली थी वहीं रक्षाबंधन के पावन पर्व पर उन्होंने ठाकुर जी को राखी बांधकर उनसे आशीर्वाद लिया था। इन्ही विधवाओं का एक दल इस वर्ष कोलकाता भी गया था तथा वहां के मशहूर दुर्गा पूजा महोत्सव में भाग लेकर आध्यात्मिक आनन्द की अनुभूति की थी।

संस्था की ओर से इसी कडी में इस साल नये तरीके से दीपावली मनाने की भी व्यवस्था की गई है। दीपदान के अवसर निर्मल यमुना और स्वच्छ यमुना तट का संकल्प भी लिया गया। इस बीच, वृन्दावन में सुलभ इन्टरनेशनल की प्रोजेक्ट कोआर्डीनेटर विनीता वर्मा ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य प्राचीन परंपराओं को तोडना न होकर इन विधवाओं के लिए ऐसा शांतिपूर्ण वातावरण उपलब्ध कराना है जहां पर वे भगवत आराधना कर सुख की अनुभूति कर सकें।

इस मौके पर वृंदावन के सभी सात उन आश्रमों को सजाकर रंग बिरंगे दीपकों से जगमगाने का ऐसा प्रयास किया गया था कि ये विधवाएं यह अनुभूति कर सकें कि वे समाज से आज भी जुडी हुई हैं। सुश्री वर्मा के अनुसार संस्था पिछले करीब एक वर्ष से 900 विधवाओं को दो हजार रूपए प्रतिमाह की आर्थिक सहायता देने के साथ साथ उनकी चिकित्सा और अन्य जरूरतों को पूरा कर रहा है। इन विधवाओं को प्रशिक्षण देकर संस्था द्वारा उनको स्वावलम्बी बनाने का भी प्रयास किया जा रहा है।

अपने घर को तो हमने
चिरागों से रौशन कर दिया
दिये जलाएं ढ़ेरों
और अमावस का सारा तम
पल भर में हर लिया।

माँ लक्ष्मी के स्वागत की
सारी तैयारी भी कर ली
मिठाई और मेवों से
पूजा की थालियाँ भर ली।

छोड़े ढ़ेर सारे पटाखे
और फूलचड़ियाँ
दोस्तों और रिश्तेदारों को दी
ढ़ेरों बधईयाँ।

कर दी मीठे पकवानों की
थालियाँ खाली
लो मन गयी हमारी
एक और दिवाली।

पर ना जाने कितने घर हैं
जहाँ आज भी दिया जला नहीं
ना जाने कितनी हैं आँखें
जिनमें कोई ख़्वाब अब तक पला नहीं।

क्या सिर्फ अपने घर को
रौशन कर देने से
दिवाली मन जाती है ?
दिवाली है बुराई पर अच्छाई की
विजय का प्रतीक
क्या सिर्फ लक्ष्मी पूजन से
हमारे कर्तव्यों की छुट्टी
हो जाती है ?

दिवाली

Monika Jain 'पंछी'
hindithoughts.com

ACTUAL PICTURES OF SAMPLE FLAT

कूष्माण्डा एवं स्कन्दमाता
Premium Residential Apartments

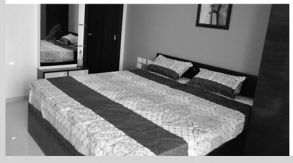
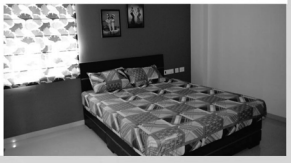

• Vastu Friendly Flats • Lift for all Floors • Gym and Party Hall • Transformer & D.G.
• Wooden Flooring • Modular Kitchen • Fan and Tube Light

A LANDMARK OF ITS OWN

Kushmanda & Skandamata Residential Apartments are located in SHYAM NAGAR area, Jaipur south-west to the center of the city.

Sodala Circle ..... 1 Km
Metro Station ..... 1 Km
Vaishali Nagar ..... 1.5 Km
Railway Station ..... 5 Km
Bus Stand ..... 6 Km
Airport ..... 10 Km

DEVELOPERS & PROMOTERS
Prescon Buildcon
1-SF, Kamal Complex, Panch Batti,M.I. Road, Jaipur - 302001.(Rajasthan)
Ph. 0141-2365026, 2363089, 98291-59090
Website:- www.prescon.in| E-mail:- jaipur@prescon.in

For More Detail Contact:
Tel: +91-9672994000, 9928774020
E-mail: presconbuildcon@gmail.com

• Ready to Possession Flats

कूष्माण्डा एवं स्कन्दमाता
Premium Residential Apartments

Luxury 3 BHK Flats at
Shyam Nagar, Jaipur

3D FLOOR PLAN

1. Entrance Lobby ....6'-0" x 6'-0"
2. Drawing/Dining ....24'-9" x 12'-7.5"
3. Kitchen ....8'-7.5" x 11'-0"
4. Bedroom1 ....17'-4.5" x 12'-10.5"
5. Toilet1 ....5'-1.5" x 8'-6"
6. Bedroom2 ....11'-0" x 13'-6"
7. Toilet2 ....6'-7.5" x 7'-0"
8. Bedroom3 ....13'-0" x 11'-0"
9. Toilet3 ....5'-0" x 9'-7.5"
10. Store ....6'-0" x 5'-4.5"

For More Detail Contact: +91- 9672994000, 9928774020

ADITYA BIRLA
UltraTech

"आदित्य बिड़ला समूह की कोटपूतली सीमेन्ट वर्क्स की तरफ से हार्दिक दीपावली की शुभकामनायें एवम् बधाइयाँ"

ग्रासिम जन सेवा ट्रस्ट, मोहनपुरा, कोटपूतली की ग्रामीण विकास गतिविधियाँ

(ग्रामीणो हेतु कंबल वितरण कार्यक्रम)

(मेधावी छात्र व छात्रा एंव संस्थान सम्मान समारोह)

(स्वैच्छिक रक्तदान शिविर कार्यक्रम)

(ग्रामीण युवको हेतु खेल प्रतियोगिता का आयोजन)

(पर्यावरण सरंक्षण हेतु जागरुकता अभियान कार्यक्रम))

(निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन)

(ग्रामीण बालिकाओ हेतु कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम)

(नवेदया स्कूल हेतु कोचिंग का शुभारंभ)

अल्ट्राटेक सीमेन्ट लि0, कोटपूतली सीमेन्ट वर्क्स
मोहनपुरा, कोटपूतली, जयपुर–303108, राजस्थान

मन का दीप न बुझने पाए

खुशहाली के अनार हैं खिलते, ये है दीवाली की करामात,
हे सीताराम, जय-जय राम, तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम।
तन-मन में दीप हैं जलते, मुस्कानों के सुमन हैं खिलते,
चारों ओर रोशन ही रोशन, आशाओं के स्वप्न हैं पलते।
नन्हें मुन्ने बच्चों को कब मिलेगा सुनहरा सवेरा,
अमावस की रात है काली, गर चहुँ ओर फैला उजाला।
लक्ष्मी-गणेश का पूजन होता, सीताराम का है डेरा,
बंधनवार से सजे हुए हैं, पुष्पों से महके, चहके रैना।
मन का दीप न बुझने पाए, स्नेह तेल से पूर्ण दीप सलौना,
बैर भाव का मर्डर कर दें, प्रीति की रीति चलते जाना।
बजरंगबली करते सबकी भली, राम भक्त को जग ने जाना,
सुबह सवेरे जब उठते हैं, राम का नाम है लेते जाना।
जब-जब समय मिलता जाए, राम का नाम न भुलाना,
दशरथ नंदन सबके प्यारे, मन-मन ज्योति फैलाते जाना।
कोई पाप अपराध न हमसे होवे, हर दम ख्याल रखते जाना,
नारी का अपमान न करना, उसे न समझो कोई खिलौना।
रावण ने की थी गलती, राम के हाथों उसे हुआ था मरना,
लंका नगरी सूनी हो गई, चूर-चूर हुआ रावण का सपना।
नारी! आरी के समान है, भूल से भी न उसे छेड़ना,
शादी का झांसा देकर, आजकल नारी को धोखा देते।
बलात्कार की घटनाएं हो रही, हत्या को अंजाम हैं देते,
समाज-देश को गंदा/कलंकित करने औ फांसी पर लटकते।
ऐसे घृणित कुकर्मों में, किशोर भी संलिप्त होते,
आज का युवा नशे में डूबा, चरित्र की परवाह न करते।
मार काट, हिंसा बुराइयों से सर्वथा दूर-दूर ही रहना।
देश भक्ति, परम शक्ति, हर्षित होकर अपनाएं,
आओ शपथ लें एक जुट होकर, देश हित में लग जाएं।
जब हिंदु, मुस्लिम, सिख, ईसाई, इंसानियत अपनाएंगी,
तभी हे गुणीजनों पावन पर्व दिपावली ज्योर्तिमय कहलाएंगी।
इस शुभ अवसर पर, भ्रष्टाचार की बली चढ़ाएं,
आँखें मूंदकर न चलें, सुबुद्धि का इस्तेमाल करो।
तभी देवगण प्रसन्न होंगे, सब खील-बताशे खाओ॥

-ब्रजगोपाल सान्याल, सायन मुंबई

पटाखों की प्रदूषण को रोकने के लिए कोई आगे नहीं आना चाहता

जयपुर। ध्वनि प्रदूषण के खिलाफ उच्चतम न्यायालय के दिशा निर्देशों के बावजूद पटाखों से होने वाले ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए कानूनी कार्यवाही कोई नहीं चाहता।

दीवाली के आस पास करीब दस दिन तक जोरदार आतिशबाजी के कारण ध्वनि एवं वायु प्रदूषण होता हैं लेकिन ऐतिहासिक परंपरा के आगे कानून लाचार हैं। इस मामले में पुलिस में कोई रिपोर्ट भी दर्ज नहीं कराता तथा ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए जिम्मेदार अधिकारी भी इसमें रुचि नहीं लेते। लाउडस्पीकर आदि से ध्वनि प्रदूषण फैलाने पर अमूमन लोग पुलिस में शिकायत दर्ज करा देते है तथा पुलिस भी कार्रवाई करती है लेकिन पटाखों को लेकर ऐसी तत्परता कोई नहीं दिखाता।

बाजार में तेज रोशनी के साथ कानफोडू पटाखों से न केवल मनुष्य बल्कि पशु पक्षी भी भयभीत हो जाते हैं। दिनभर आकाश में कलरव करने के बाद विश्राम के लिए उन्हें किसी पेड की ही शरण लेनी पड़ती है लेकिन पटाखों के कारण उनका यह आसरा भी छीन जाता हैं।

बाजार में इस तरह के उपकरण आ गए जिनसे लगातार तेज ध्वनि और रोशनी होती है तथा कई बार आस पास के लोग तेज ध्वनि और धुंए से बैचेन हो जाते हैं। दीवाली के दिन पटाखों के प्रति बहुत ज्यादा ललक रखने वाले लोग एक के बाद एक कानफोडू पटाखे छोड़ते हैं तथा सद्भाव के कारण लोग

उन्हें उलाहना भी नहीं दे पाते।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि पटाखों को लेकर शिकायत से आमतौर पर लोग बचते हैं तथा पुलिस भी इसी वजह से कार्यवाही में हिचकिचाती हैं।

राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ध्वनि प्रदूषण को लेकर जांच करता रहता है तथा इसकी रिपोर्ट भी जिला अधिकारियों को दी जाती है लेकिन व्यापक पैमाने पर इस बारे में चिंता देखने को नहीं मिलती। बोर्ड पिछले तीन चार साल में लगातार दीपावली पर ध्वनि प्रदूषण की जांच करता रहा है जो मापदंडों से ज्यादा ही आती हैं।

हालांकि दीपावली के आस पास भी ध्वनि प्रदूषण ज्यादा ही मापा गया हैं। पन्द्रह अक्टूबर को जयपुर के गांधीनगर, जवाहर नगर, राजापार्क, छोटी चौपड, दुर्लभजी, सिविल लाईस क्षेत्र में ध्वनि प्रदूषण की जांच की गई जिसमें दिन और रात में ध्वनि प्रदूषण मापदंड से ज्यादा ही आंका गया। हालांकि ध्वनि प्रदूषण में पटाखों की ही भूमिका नहीं थी बल्कि तेज रफ्तार के वाहन और घरों और बाजारों में बजने वाले टीवी रेडियों आदि का शोर भी शामिल हैं।

वर्ष 2001 से पहले ध्वनि प्रदूषण को ज्यादा गंभीरता से नहीं लिया जाता था लेकिन उच्चतम न्यायालय में एक रिट याचिका दायर होने पर इस बारे में दिशा निर्देश दिए गए। कानून की पालना करने वाली एंजेसियां दीपावली के आस पास सक्रिय हो जाती हैं तथा अखबारों में विज्ञापन के जरिए लोगों को सजग रहने का संदेश दिया जाता हैं। ठोस कार्यवाही के लिए अभी तक कोई एजेंसी आगे नहीं आई हैं।

Greenply®
Industries Limited

दया नहीं, आत्म निर्भर बनने में सहयोग कीजिए!

दिल्ली में ब्लाइंड स्कूल रीलिफ एसोसिएशन द्वारा लोदी रोड पर लालबहादुर शास्त्री मार्ग पर ओबेराय होटल के पास स्थित ब्लाइंड स्कूल ग्राउंड में 14 से 20 अक्टूबर 2014 तक दिवाली मेला आयोजित किया गया। इस दिवाली मेले में दृष्टिबाधित प्रशिक्षणार्थियों द्वारा तैयार की गई विभिन्न सामग्री व अन्य आयटम बिक्री हेतु प्रदर्शित किए गए। इस सात दिवसीय मेले में लोगों की भारी उपस्थिति ने स्कूल प्रबंधन और दृष्टिबाधित प्रशिक्षणार्थियों का उत्साह वर्धन किया। दिल्ली में आयोजित यह ब्लाइंड स्कूल दिवाली मेला 2014 अन्य शहरों, संस्थानों और समाजसेवियों आदि के लिए एक प्रेरणादायी उदाहरण है।

नेत्रहीन मां को 27 हजार किमी पैदल चलकर कराए चारधाम

17 साल पहले शुरू हुई यात्रा समाप्त

जेब में एक रुपया नहीं, चल दिए यात्रा पर

उज्जैन। 87 साल की नेत्रहीन मां की इच्छा पूरी करने के लिए वह इस कलियुग में श्रवण कुमार बन गया। कैलाश ने जब यात्रा शुरू की तो उसके पास जेब में एक रुपया नहीं था। भगवान भरोसे वह कावड़ लेकर निकल पड़ा और गर्मी, ठंड व बारिश के बीच यात्रा आगे बढ़ती चली गई। जहां भी गया, उस शहर में लोगों ने रहने, खाने की मदद की और कुछ रुपए भी दिए, लेकिन पूरी यात्रा में कहीं कोई सरकारी मदद नहीं ली।

अपने कंधों पर कावड़ में मां को बैठाकर 17 साल और कुछ महीनों में 27

हजार किलोमीटर पैदल चलकर उसने चारधाम की तीर्थ यात्रा पूरी करा दी। बरगी (ग्वालियर) के 40 वर्षीय कैलाश गिरि ब्रह्मचारी कावड़ में बैठी मां कीर्ति देवी के साथ जब उज्जैन की सड़कों से गुजरा तो उसे देखने वालों की नजरें थम गईं और बूढ़े मां-बाप को कंधों पर यात्रा कराने वाले पौराणिक पात्र श्रवण कुमार की याद आ गई। कैलाश गिरि ने कहा कि 1995 में क्रम से रामेश्वर, जगन्नाथपुरी, बद्रीनाथ और द्वारिका धाम की यात्रा कर अब उज्जैन में महाकाल दर्शन के साथ यात्रा पूरी की है। हालांकि संकल्प के मुताबिक वह मां को गांव तक कावड़ से ही ले जाएगा।

महान् प्राचीन चमत्कारिक

श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ

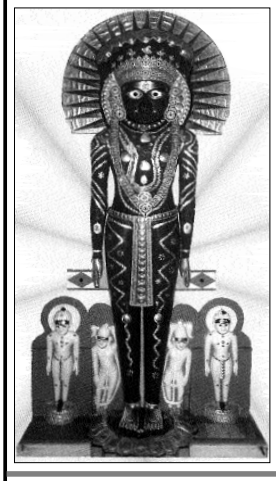

दर्शनार्थ अवश्य पधारिये

- सम्पूर्ण भारत देश में श्री नागेश्वर प्रभु की 14 फीट (भगवान के देह प्रमाण वाली) नीलवर्ण से शोभित अलौकिक प्रतिमा है।
- यहाँ विशाल ज्ञान भंडार तथा पूज्य साधु-साध्वी म. श्री के पढ़ने के लिए संस्कृत पाठशाला उपलब्ध है। आप भी ज्ञान भण्डार के लिए उपयोगी पुस्तकें भिजवाइये।
- सफफणा और कार्योत्सर्ग मुद्रा में 3000 वर्ष प्राचीन जैन जगत में विश्वभर में एक ही है जो श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ के रूप में विख्यात है।
- यहाँ से गुजरती हुई स्पशेल ट्रेन भी एक दिवस के लिए यहाँ यात्रा का कार्यक्रम करती है।
- यहाँ धर्मशाला, भोजनशाला आदि सम्पूर्ण व्यवस्था है।
- यहाँ अट्ठम तप करने वाले भाग्यशालियों की व्यवस्था की जाती है।
- श्री चतुर्विध संघ से नम्र आग्रहभरी विनती है कि अपने गाँव के जिन मंदिर में श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा विराजमान कर प्रभु पूजा के श्रावक जन्म को सफल बनावें, परन्तु ऐसे स्थान को नागेश्वर तीर्थ नाम नहीं देवें, क्यों कि श्री नागेश्वर तीर्थ सम्पूर्ण विश्व में मूल और प्राचीन उन्हैल (राजस्थान) में ही है। तथ्य के आधार पर विपरीत इस प्रकार का नाम दुरुपयोग भयंकर आशातना होगी, आशा है कि विद्वजन इसका ध्यान रखेंगे।

विनीत

दीपचन्द जैन, सचिव

सादर जय जिनेन्द्र

श्री जैन श्वेताम्बर नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ पेढ़ी

पो. उन्हैल नागेश्वर - 326515 जिला झालावाड़ (राज.) : (07410) 240711, 240715 फैक्स : 240716

आलोट (07410) 230660, चौमहला (07435) 244457

E-mail-nageshwar parshwa@rediffmail.com

बच्चों की अनूठी पहल

हनुमानगढ़। टाउन के सरस्वती कॉन्वेट स्कूल के विद्यार्थीयों ने एक अनुठी पहल की। स्थानीय सरस्वती कान्वेट स्कूल के विद्यार्थीयों द्वारा अपनी मन मर्जी से दीपावली पर पटाखें न चलाकर उन्ही पैसों से मिठाईयां खरीदकर गरीब परिवार के बच्चों में बांटने का निर्णय किया गया। इस अवसर पर रिद्म सोनी ने बताया कि हमने अपनी पॉकेट मनी के पैसे सात बच्चों ने इक्ट्ठे कर दीपावली पर एक अनुठी पहल कर मिसाल कायम करने का संकल्प लिया। बच्चों ने बताया कि विद्यालय व्यवस्थापक राजेश दादरी ने बच्चों को दीपावली पर पटाखें से होने वाली हानियों के बारे में बताया था। तथा उन्होने बताया कि फिजूल खर्ची न करे उन्ही पैसों से किसी गरीब परिवार के बच्चों के चेहरों पर हल्की सी मुस्कान ला सके। तो ये मानवता की सबसे बडी सेवा होगी। इस बात को लेकर आज सात बच्चों ने यह निर्णय लियाँ कि इस बार पटाखें नहीं बजायेगे इस कार्य में रिद्म सोनी, साक्षी गाढिया, युक्ति, पारस, अथाह भटनागर, यश करनानी तथा विनित दादरी ने सहयोग किया। इस बच्चों ने मिठाईयां एक्सल फैक्ट्री के पीछे झुग्गी बस्तीयों में गरीब बच्चों को बांटी तथा गुरूसर रोड पर स्थित ढोली बस्ती के बच्चों को मिठाईयां बांटी।

धनतेरस की परम्परा आज भी है कायम

पटना। आधुनिक युग की तेजी से बदलती जीवन शैली में भी धनतेरस की परम्परा कायम है। समाज के सभी वर्गों के लोग स्वर्ण समेत कई महत्वपूर्ण चीजों की खरीदारी के लिए पूरे साल इस पर्व का बेसब्री से इंतजार करते हैं।

पंचांग के अनुसार हर साल कार्तिक कृष्ण की त्रयोदशी के दिन धन्वतरि त्रयोदशी मनायी जाती है, जिसे आम बोलचाल में धनतेरस कहा जाता है। यह मूलत: धन्वन्तरि जयंती का पर्व है और आयुर्वेद के जनक धन्वन्तरि के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है।

धनतेरस के दिन नये बर्तन या सोना-चांदी खरीदने की परम्परा है। इस पर्व पर बर्तन खरीदने की शुरुआत कब और कैसे हुई, इसका कोई निश्चित प्रमाण तो नहीं है लेकिन ऐसा माना जाता है कि जन्म के समय धन्वन्तरि के हाथों में अमृत कलश था, यही कारण होगा कि लोग इस दिन बर्तन खरीदना शुभ मानते हैं।

पौराणिक कथाओं में धन्वन्तरि के जन्म का वर्णन करते हुए बताया गया है कि देवताओं और असुरों के समुद्र मंथन से धन्वन्तरि का जन्म हुआ था। वह अपने हाथों में अमृत कलश लिए प्रकट हुए थे। इस कारण उनका नाम पीयूषपाणि धन्वन्तरि विख्यात हुआ। धन्वन्तरि को विष्णु का अवतार भी माना जाता है।

परम्परा के अनुसार धनतेरस की संध्या को यम के नाम का दीया घर की देहरी (बाहर) पर रखा जाता है और उनकी पूजा करके प्रार्थना की जाती है कि वह घर में प्रवेश नहीं करें और किसी को कष्ट नहीं पहुंचाएं। देखा जाए तो यह धार्मिक मान्यता मनुष्य के स्वास्थ्य और दीर्घायु जीवन से प्रेरित है।

यम के नाम से दीया निकालने के बारे में भी एक पौराणिक कथा है कि एक बार राजा हिम ने अपने पुत्र की कुंडली बनवायी। इसमें यह बात सामने आयी कि शादी के ठीक चौथे दिन सांप के काटने से उसकी मृत्यु हो जाएगी। हिम की पुत्रवधू को जब इस बात का पता चला तो उसने निश्चय किया कि वह हर हाल में अपने पति को यम के कोप से बचाएगी। शादी के चौथे दिन उसने पति के कमरे के बाहर घर के सभी जेवर और सोने-चांदी के सिक्कों का ढ़ेर बनाकर उसे पहाड का रूप दे दिया और खुद रात भर बैठकर उसे गाना और कहानी सुनाने लगी ताकि उसे नींद नहीं आए।

रात के समय जब यम सांप के रूप में उसके पति को डंसने आया तो वह आभूषणों के पहाड़ को पार नहीं कर सका और उसी ढेर पर बैठकर गाना सुनने लगा और पूरी रात बीत गई। इसके बाद अगली सुबह सांप को लौटना पड़ा। इस तरह हिम की पुत्रवधु ने अपने पति की जान बचा ली। माना जाता है कि तभी से लोग घर की सुख-समृद्धि के लिए धनतेरस के दिन अपने घर के बाहर यम के नाम का दीया निकालते हैं ताकि यम उनके परिवार को कोई नुकसान नहीं पहुंचाए।

आने वाली पीढ़ियां अपनी परम्परा को अच्छी तरह समझ सकें, इसलिए भारतीय संस्कृति के हर पर्व से जुड़ी कोई न कोई लोककथा अवश्य है। दीपावली से पहले मनाए जाने वाले धनतेरस से भी जुड़ी एक लोककथा है, जो कई युगों से कही और सुनी जा रही है।

भारतीय संस्कृति में स्वास्थ्य का स्थान धन से ऊपर माना जाता रहा है। यह कहावत आज भी प्रचलित है- पहला सुख निरोगी काया, दूजा सुख घर में माया। इसलिए दीपावली में सबसे पहले धनतेरस को महत्व दिया जाता है, जो भारतीय संस्कृति के सर्वथा अनुकूल है।

धनतेरस के दिन सोने और चांदी के बर्तन, सिक्के तथा आभूषण खरीदने की परम्परा रही है। सोना सौंदर्य में वृद्धि तो करता ही है, मुश्किल घड़ी में संचित धन के रूप में भी काम आता है। कुछ लोग शगुन के रूप में सोने या चांदी के सिक्के भी खरीदते हैं। बदलते दौर के साथ लोगों की पसंद और जरूरत भी बदली है, इसलिए इस दिन अब बर्तनों और आभूषणों के अलावा वाहन, मोबाइल इलेक्ट्रोनिक सामान मसलन टेलीविजन, वाशिंग मशीन फ्रिज आदि भी खरीदे जाने लगे हैं। वर्तमान समय में देखा जाए तो मध्यमवर्गीय परिवारों में धनतेरस के दिन वाहन खरीदने का फैशन सा बन गया है।

इस दिन लोग गाड़ी खरीदना शुभ मानते हैं। कई लोग तो इस दिन कम्प्यूटर और बिजली के उपकरण भी खरीदते हैं।

रीति-रिवाजों से जुड़ा धनतेरस आज व्यक्ति की आर्थिक क्षमता का सूचक बन गया है। एक तरफ उच्च और मध्यम वर्ग के लोग धनतेरस के दिन विलासिता से भरपूर वस्तुएं खरीदते हैं तो दूसरी ओर निम्न वर्ग के लोग जरूरत की वस्तुएं खरीद कर धनतेरस का पर्व मनाते हैं। इसके बावजूद वैश्वीकरण के इस दौर में भी लोग अपनी परम्परा को नहीं भूले हैं और अपने सामर्थ्य के अनुसार यह पर्व मनाते हैं।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

शुभ दीपावली

शुभ दीपावली

दीपावली के मंगल पर्व पर हार्दिक शुभकामनाऐं।
ये नूतन वर्ष आपको सुख और समृद्धि से परिपूर्ण करें।

JK TYRE & INDUSTRIES LTD

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

श्रीमती पुष्पादेवी जौहरीलाल खत्री स्मृति न्यास
जयपुर

सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

दीपावली पर घरौंदा, रंगोली की है विशेष परम्परा

पटना। भारतीय संस्कृति में हर पर्व का अपना विशेष महत्व होता है और दीपों का महापर्व दीपावली भी इससे अलग नहीं। दीपावली पर घरौंदा और रंगोली बनाये जाने का भी परम्परा लंबे समय से चली आ रही है जो वर्तमान आधुनिकता के दौर में भी लोगों ने नहीं भुलाई है।

कार्तिक माह के शुरू होते ही घर में साफ सफाई का काम शुरू हो जाता है। इस महीना दीपावली के आगमन का होता है और इसी दौरान घरों में घरौंदा बनाने का निर्माण आरंभ हो जाता है। घरौंदा घर शब्द से बना है। सामान्य तौर पर दीपावली के आगमन पर अविवाहित लड़कियां घरौंदा का निर्माण करती है। घरौंदा का निर्माण इसलिये करती है कि क्योंकि उनका घर भरापूरा रहे। सामान्य तौर पर घरौंदा बनाने का प्रचलन दीपावली के दिन होता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार जब भगवान श्रीराम चौदह वर्ष का वनवास काटकर अपनी नगरी अयोध्या लौटे थे तो उनके आने की खुशी में उनके महल को दीपों से सजाया गया था। इसी को देखते हुये घरौंदा बनाकर उसे सजाने का प्रचलन हुआ।

घरौंदा में सजाने के लिये कुल्हिया-चुकिया का प्रयोग किया जाता है और उसमें अविवाहित लड़कियां उसमें फरही, मिष्ठान आदि भरती है, इसके पीछे मुख्य वजह रहती है कि भविष्य में जब वह शादी के बाद अपने घर जाये तो वहां भी उनका अनाज (भंडार) भरा रहे। कुल्हियां चुकिया में भरे अन्न का प्रयोग वह स्वयं नहीं करती है और इसे अपने भाई को खिलाती है।

इसके पीछे मुख्य वजह यह रहती है कि घर की रक्षा और उसका भार वहन करने का दायित्व पुरूष के कंधे पर रहता है। घरौंदा बनाने के लिये अविवाहित लड़कियां काफी मेहनत करती है और उसे अपने अनुरूप बनाती है। इसके पीछे मान्यता यह है कि उसे जो घर मिलें वह भी उसके आशा के अनुरूप हो।

सामान्य तौर पर घरौंदा का निर्माण मिट्टी से होता है लेकिन मौजूदा समय में लकड़ी, गत्ता और थरमोकोल के भी घरौंदे का निर्माण किया जा रहा है। घरौंदा से खेलना लड़कियां पसंद करती है। इस कारण वह इसे इस तरह से सजाती है जैसे वह अपना घर हो। घरौंदा की सजावट के लिए दीये का प्रयोग किया जाता है।

इसकी मुख्य वजह यह है कि इससे उसके घर में अंधेरा नही हो और सारे घर में रोशनी कायम रहे। आधुनिक दौर में घरौंदा एक मंजिला से लेकर दो मंजिला तक बनाये जाने की परंपरा है। घरौंदा के साथ ही रंगोली बनाये जाने की भी परंपरा है। दीपावली के दिन घर की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाता है और रंगोली घर की चार चांद लगा देती है। घर चाहे कितना भी अधिक सुंदर हो यदि रंगोली घर के मुख्य द्वार पर नहीं सजायी गयी तो घर की सुंदरता अधूरी सी लगती है।

सामान्य तौर पर रंगोली का निर्माण चावल, गेहूँ, मैदा, पेंट अबीर से बनाया जाता है लेकिन सर्वश्रेष्ठ रंगोली फूलों से बनायी जाती है। इसके लिये गेंदा और गुलाब के साथ हरसिंगार के फूलों का इस्तेमाल किया जाता है जो देखनें में सुंदर तो लगता ही है साथ हीं सात्विकता को भी उजागर करता है।

संदीप भूतोड़िया ने की राज्यपाल से मुलाकात

जयपुर। शेखावटी के मूल निवासी समाजसेवी और संस्कृतिकर्मी संदीप भूतोडिया ने राजस्थान के गर्वनर कल्याण सिंह से राज भवन में मुलाकात की। इस शिष्टाचार मुलाकात में राज्यपाल ने संदीप भूतोडिया से राज्य में कला व संस्कृति के विविध आयामों पर चर्चा की। राज्यपाल कल्याण सिंह ने राज भवन में शीघ्र ही कलाकारों के साथ एक विशेष कार्यक्रम के आयोजन का आश्वासन दिया।